

संप्रसंग व्याख्या

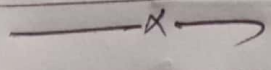
Prof. Raj Kumar Sharma

J. S. College, Patna, Bihar

"लौकिक अरहरा बिना बरख जायत। लच्छन - कुम अक्षय
 शहीक थ' नेने बरख। मुहा गै। चारिम राते सुष बरिषल।
 मुसाधार। अरि शाति सुपाना करल भेष। मुहा तँइ की
 करु लागत जे पानि भेलहुए।"

प्रस्तुत गद्यांश श्री लालि
 श्रीक पुर्याय अत्यासल लेल गेण कहि। बपुरवनाक
 खेतिहर किवान मजदूर अपना खेतमे सुषगत जाबैत
 सरलक मनोभावक कविधारी थिक। पानि नैला पर
 करु नहि बुझाहत कारण सम्पूर्ण बपुरवनाक भूमिमे
 बालु - बालु जे पानि सौख्यमे साक्षात राख्य।
 चारिम राते छेक मुसाधार चारिम भेके तथापि करु
 खेतमे पानि नैलेक कर श बुझाहत हलके, तँ की किवानक
 किवानी चलैत ई ठाक कथन कहि- 'काहि काहा अत हल,
 तरवने नाथे गुरस्थ।' से अरहरा जेना किन बरख
 चल जायत। सब लक्षणकुम शहीक भेष जा करल
 हुक।

जिवन रहव परिने जरुरी हूक संसार में। तखन लोक-
लाज। नीक-बेजाय सभय आधार हूक।



पुस्तुत जयांश श्री लालिजी
रचित पुथीपुत्र उपन्याससँ उद्धृत अछि। पुथीपुत्रक
अमस्त धरनाकुम-यथार्थक अशातल पर अरित अछि।
बसुरबन्नाक पासवान टोलक विशेखी पादवानक बेटी
विजली जकर विशार रेलवेक पैटर्न हीरालाल सँ
जेल हू। विजली पतिक संग रेलवेक क्वार्टरमे रहै
अछि। विजलीक पूर्वक प्रेम-प्रसंग कथा हीरालाल सँ
ज्ञान रोहत हू न' ओ विजलीक संग मारि-पीट
करैत अछि, इच्छुटी पर जाइत अछि न' क्वार्टरमे
नाला टोकि क' जाइत अछि। जे विजली पक्षी
जकाँ अन्कन्द विचरण करयवाली सँ ओह छोट
क्वार्टर राजति जकाँ बन्द अ' क' रहि जाइह।
ओकरा पर ओह मनक चोचक प्रकाव हू। ओ नि:श्रम
पड़ल हल, तखन ओकर नजरि रिकडकी बटे आकाश
दिस जाइत हू। दुजोरिया अगि जेल रहैक। ओ अपन
दगा पर षडपड़ा उठल। आव हम प्रत्य नहि रहि
सकैत ही, प्रत्य रहव न' हम मारि जायब कुहरि-
कुहरिके नहि- आव नहि। जिवन रहव परिने जरुरी
हूक संसारमे तखन लोक-लाज, नीक-बेजाय।

विजलीक अंशप अंकल्प हूँ। जिवन
रहव लेल' क्वार्टरक हहरदेवाली पानि वाहर
जेल जा शता-शति नैरु चल सकैत अछि।

